Today's Poem – 05.05.2014

देही-अभिमानी बाप तुम्हें देही-अभिमानी भव का पाठ पढ़ाते हैं,

देह-अभिमान को छुड़ाते हैं

आत्म-अभिमानी रहने की प्रैक्टिस करो

देह के लगाव को छोड़ एक बाप को याद करो

नाम-रूप में नहीं पड़ना

मान-शान में नहीं फंसना

सतोप्रधान बनने के लिए सिवाए बाप के और किसी को भी याद नहीं करना है

इस अन्तिम जन्म में विकारों पर विजय प्राप्त कर जगतजीत बनना है

सबसे क्षीरखण्ड होकर है रहना

एक बाप को याद है करना

स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन!!

मेरा बाबा!!

ॐ शान्ति !!!